1 9 MAY 2022

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.......

Sr. No. of Question Paper : 3202 **A**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×3=30)

(क) दूनो एके साथे रहे के परानी ।

देस परदेस में असाम-मुलतानी

संगही में राखऽ चरनों के दासी जानी । परानी...

गवना करा के दसे जइब बिरानी,

P.T.O.

केकरा पर छोड़ि कर टुटही पलानी। परानी...

केकार से आग मागब, केकरा से पानी,

खला-ऊँचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी। परानी...

कहत 'भिखरी' सून होई राजधानी,

पति-मति फेरि द बिंधाचल भवानी। परानी...

अथवा

तोहरे कारनवाँ परानवाँ दुखित बाटे,

दया क के दरसन के दऽ हो बलमुआँ

काइ काइलीं चूकवा कि छोड़लड़ मुलुकबा तूँ

कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआँ।

साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में,

एको नाहीं पतिया भेजलवऽ बलमुआँ।

(ख) कमल से नेत्र नाक सुआ सा चन्दा मुख गोल जिसका

झूठ कदे न बोल्या करता रूप बड़ा अनमोल जिसका

नल जंगल में फिरया करैं या, सदा अधर्म तैं डर्‌या करै था।

प्राण खींच तप कर्‌या करैं था, सत में पूरा तोल जिसका।

अथवा

आदर करके पास बिठाले सब पुरवासी आगे

भोजन तक की सोधी कोन्यां आच्छे खेलण लागे।

पति बिन किस तैं करूं जिकर में, ऐसा चढगया सांस शिखर में।

जिन नैं काल्ह सुणी थी तेरे फिकर में वै सारे रात्यूं जागे।

(ग) साँचों सत जंगल का जीव में, देख्यों हे म्हने देख्यो हे।

सत को सांचो पड़छो देख्यो, यो मन म्हरो बेक्यो हे

जैसे पाप की पड़ती छत में, सत को धांबो टेंक्यों हे।

सत को सांच देखी ने, भरभ मन, को हेडी ने फेंक्यो हे।

सत की संगत ने मन जाग्यों, मोह को बंदन छेक्यों हे

गिद्ध पे सती हुई हे गोरदणी, आग में तन सब सेक्यों हे।

अथवा

अरे हां जी सत हम देखंगा सतवंती, पिंगला नार को।

पिंगला का मन में घणों, हे सत को अभिमान

सतवंती का सत की परिक्छा, आज करां परधान

परखवा पिंगला नार के, भेटां गरब गुमान

खोटा खरा सोना की जैसे, जवरी करे पेचान

गरब भरी बातां करे, करे घमंड की बात

या तो बात म्हारा मन में खटकी, फिकर होय दिन रात।

2. लोकनाट्य परम्परा पर विचार करते हुए सांग की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

ख्याल का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परम्परा की विवेचना कीजिए।

3. 'भिखारी ठाकुर' का मन संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार में अधिक रमा है-बिदेसिया के आधार पर सिद्ध कीजिए। (10)

अथवा

विदेसिया के नाट्य-शिल्प की समीक्षा कीजिए।

4. नल-दमयन्ती सांग में 'नल' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

अथवा

सांग की विशेषताओं के आधार पर नल-दमयन्ती की समीक्षा कीजिए।

5. 'राजयोगी भरथरी' माच की मूल संवेदना लिखिए। (10)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' के आधार पर माच के शिल्प का विवेचन कीजिए।

(2000)